का स्वरूप भी बदल चुका है। इस स्वरूप के बदलने का मुख्य कारण बेरोजगारी, जनसंख्या के वृद्धि, औद्योगिक इत्यादि। रोजगार की तलाश में लोग शहरों की ओर भाग रहे हैं। अपनी आर्थिक दुर्बलताओं के कारण परिवारों में रिश्ते टूट रहे हैं। परिवार के सदस्य अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए संयुक्त परिवार को लांघ कर दूर होते जा रहे हैं। इससे परिवारों में तनाव भी बढ़ रहे।

(iii) स्त्रियों के व्यावसायिक समायोजन के लिए - For Vocational Adjustment Women

वर्तमान काल में हो रहे सामाजिक परिवर्तनों में महिलाओं की सामाजिक, पारिवारिक स्थिति में परिवर्तन को बहुत महत्व दिया जा रहा है। इन परिवर्तनों ने सिद्ध कर दिया है कि स्त्रियां केवल घर के काम के लिए नहीं होती हैं। स्त्रियां जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य की भांति कार्य कर रही हैं। बल्कि कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से आगे भी निकल चुकी हैं और अपनी आर्थिक और सामाजिक पारिवारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए स्त्रियां विभिन्न व्यवसायों में प्रवेश कर रही हैं। ऐसी अवस्था में स्त्रियों को भी निर्देशन की आवश्यकता अनुभव होती है।

(iv) जनसंख्या वृद्धि के कारण - Due to population Explosion

विश्व में कई देश जनसंख्या, वृद्धि के प्रकोप से बच नहीं सके। भारत भी उनमें से एक ऐसा देश है। यहां पर जनसंख्या में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। इस वृद्धि के कारण देश की कई परियोजनाएं असंतुलित होकर रह गई। जनसंख्या को बढ़ने से रोकने के लिए व्यक्तियों को जागरूक करना आवश्यक इस कार्य में निर्देशन - सेवा प्रोग्राम महत्वपूर्ण सिद्ध सकता है।

3. शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता - Need of Guidance form the stand point of Education →

शिक्षा सबके लिए और सब शिक्षा के लिए है इस विचार के अनुसार प्रत्येक बालक को शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। लेकिन इसके साथ यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक बालक को उसकी योग्यता एवं बुद्धि के आधार पर शिक्षित किया जाए। यह कार्य निर्देशन द्वारा ही सम्भव है।

शैक्षिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता निम्न प्रकार से -

(i) अपव्यय व अवरोधन की समस्या के समाधान के लिए -

भारतीय शिक्षा जगत में एक बहुत बड़ी समस्या अपव्यय से सम्बन्धित है। यही अनेक छात्र शिक्षा स्तर को पूरा किए बिना ही विद्यालय छोड़ देते हैं। इस प्रकार उन बालक की शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय व्यर्थ हो जाता है। इस प्रकार की समस्या अवरोधन की है। अनेक छात्र एक कक्षा में कई वर्षों तक फेल होते रहते गलत पाठ्यक्रम के चुनाव, बुरे छात्रों की संगति या पारिवारिक कारणों से अपव्यय तथा अवरोधन की समस्या उत्पन्न होती है। निर्देशन - सेवा इन कारणों का निदान करके इन समस्या के समाधान में योगदान कर सकती है।

(ii) सम्बन्धित पाठ्यक्रम का चयन →

वर्तमान काल में कई-2 विषयों का प्रसार हुआ है। इन विषयों को कई विद्यालयों में पढ़ाया भी जाता है। लेकिन सभी छात्रों की रुचि तथा योग्यता इन विषयों को पढ़ने के लिए नहीं है। इसका मुख्य कारण छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता होती है।

notes
Phone

अतः व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर पाठ्यक्रम का चुनाव किया जाना चाहिए। इस कार्य में निर्देशन अत्यधिक सहायक हो सकता है। पाठ्यक्रम के चुनाव के लिये निर्देशन हेतु मनोविज्ञान में अनेक प्रमापीकृत परीक्षणों (standardised Tests) का प्रयोग किया जाता है। इन परीक्षणों के परिणामों के आधार पर विद्यार्थी को पाठ्यक्रम चयन में सहायता की जाती है।

(iii) व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में (To provide Education According To Individual Differences) → प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। निर्देशन की आवश्यकता व्यक्तिगत भिन्नताओं, योग्यताओं, रुचियों इत्यादि को ध्यान में रखते हुए उन्हें शिक्षा प्रदान करने के लिये होती है। समाज की आवश्यकता एवं संरचना भिन्नता में एकता की है। ऐसे में व्यक्ति में निहित सकारात्मक एवं नकारात्मक गुणों को पहचान कर उन्हें परिवार, समाज और राष्ट्र की धारा पर उचित रूप से देने से है ताकि सम्पूर्ण आकृति अर्थ इकाई व्यक्ति के रूप में उभर कर आये।

04. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से (from Psychological point of view)

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास ही हमारी सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य है। व्यक्ति की विकास की प्रक्रिया बहुत ही जटिल है। इस विकास प्रक्रिया का विश्लेषण करना एवं उसे गहराई तक समझ पाना बहुत ही कठिन कार्य है। इन जटिलताओं को समझने में जरा सी त्रुटि के परिणाम बहुत ही हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। व्यक्ति का व्यक्तित्व तब नष्ट होने लगता है जब उसमें कई प्रकार की ग्रन्थियाँ (complexes) बननी शुरु हो जाती है। यदि इन ग्रन्थियों को समय रहते ही दूर न किया जाये तो व्यक्ति असामान्य (Abnormal) होने लगता है। उसमें कई प्रकार की मानसिक एवं संवेगात्मक (Disformities) पैदा होने लगती है। अतः इन ग्रन्थियों के प्रभाव से व्यक्ति को मुक्त रखने के लिये निर्देशन की व्यवस्था करना बहुत आवश्यक है। अतः मनोविज्ञान की दृष्टि से निम्नलिखित पक्षों के विकास हेतु निर्देशन आवश्यक है।

01. व्यक्तित्व के विकास हेतु →

व्यक्तित्व के अन्तर्गत मनो-शारीरिक विशेषताएं तथा आर्जित गुण आदि सभी सम्मिलित किये जाते हैं। प्रत्येक बालक के व्यक्तित्व का समुचित विकास करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। किन्तु इस उद्देश्य की प्राप्ति निर्देशन सेवा से सहायता मिलती है। निर्देशन व्यक्ति को वंशानुसंक्रमण से प्राप्त गुणों को प्रकाश में लाकर उनके विकास के लिए उचित पर्यावरण का निर्माण कर अपनी महत्त्वपूर्ण सेवा प्रदान करता है।

JANUARY '20

22 Day 022-344 Wk-04 WEDNESDAY

02. व्यक्तित्व विभिन्नताओं को समझने हेतु — प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तित्व का विभिन्नता होता है। यदि हम व्यक्ति के व्यवहारों में आवश्यक परिवर्तन लाना चाहते हैं, तो इन विभिन्नताओं को महत्व देना अनिवार्य है। बालकों का समुचित विकास करने के लिए उनकी वैयक्तिक विभिन्नताओं को जानना तथा उन्हें विकास की सही दिशा प्रदान करना आवश्यक होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्देशन सेवा की सहायता ली जा सकती है।

03. भावात्मक समस्याओं का समाधान करने के लिए — निर्देशन सहायता द्वारा भावात्मक नियंत्रण में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त निर्देशक उन कठिनाईयों का पता लगा सकते हैं जिनके कारण भावात्मक अस्थिरता उत्पन्न हुई है।

04. सामाजिक समायोजन के लिए — समायोजन प्रत्येक प्राणी की एक आधारभूत आवश्यकता है। बिना समायोजन के मनुष्य का जीवन दूभर हो जाता है। व्यक्ति के समायोजन के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति की योग्यताओं और क्षमताओं के विकास के अवसर प्रदान किये जायें। यदि किसी व्यक्ति को अभिव्यक्ति के अवसर नहीं दिये जाते तो उसकी प्रतिभाओं को विकसित होने का अवसर ही नहीं मिलता। यदि स्कूल और परिवार के वातावरणों में बहुत अधिक अन्तर है। तो बालक को वातावरण समायोजन करने में कठिनाई होती है। समायोजन के अभाव के अनेक कारण हो सकते हैं। जैसे - पाठ्यक्रम का चुनाव, अयोग्य अध्यापक का चुनाव।

05. शहरी क्षेत्रों की दृष्टि से (From Urban Areas point of view)
आज शहरी व्यवस्था में बदलाव नजर आ रहे हैं। और ग्रामीण क्षेत्र के लोग भी शहर की ओर आकर्षित हो रहे हैं। आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण आने लगा है। अतः लोगों को निम्नलिखित दृष्टि से समायोजन हो सके, अतः निर्देशन की आवश्यकता है।

1. शिक्षा की दृष्टि से (From Educational point of view)
2. मनोरंजन की दृष्टि से (From Recreational point of view)
3. व्यवसाय की दृष्टि से (From Vocational point of view)
4. श्रमिकों की दृष्टि से (
5. महिलाओं की दृष्टि से

06. ग्रामीण क्षेत्रों की दृष्टि से –
ग्रामीण क्षेत्रों की अपनी अलग आवश्यकताएँ होती हैं तथा उनकी अपनी अनेक प्रकार की समस्याएँ हैं। उनमें समस्या समाधान में निर्देशन की आवश्यकता होती है।
निम्नलिखित क्षेत्रों की दृष्टि से उन्हें विशेष निर्देशन की आवश्यकता है।

(i) सामाजिक दृष्टि से।
(ii) आर्थिक दृष्टि से।
(iii) शिक्षा की दृष्टि से।
(iv) जनसंख्या की दृष्टि से।
(v) स्वास्थ्य की दृष्टि से।
(vi) राजनैतिक चेतना की दृष्टि से।

Scanned with CamScanner

JANUARY '20

24 Day 024-342 Wk-04
FRIDAY

Q.4 राष्ट्रीय दृष्टि से (Form National point of view)

किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी संभव है, जब उसके नागरिक सांस्कृतिक मूल्यों का संवरण करें राष्ट्रीयता की भावना, एकता, समरसता की भावना रहे इस हेतु निर्देशन की आवश्यकता है। उत्तम नागरिकता के पाठ, मानव स्रोतों का समुचित उपयोग, राष्ट्रीय सेवा एवं देश सेवा की भावना विकसित हो सकती है। यदि उसे उचित निर्देशन मिले राष्ट्रीय सेवा एवं देश सेवा की भावना विकसित हो सकती है। यदि उसे उचित निर्देशन मिले राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों में व्यापकता जुड़ सके इस हेतु भी निर्देशन आवश्यक है।

अपने राष्ट्र की सुरक्षा हर नागरिक का दायित्व है। यह जरूरी नहीं है कि वह सेना में भर्ती हो लेकिन सैनिक का जज्बा रखना महत्वपूर्ण है। इस हेतु उसमें राष्ट्रीय सुरक्षा की भावना निर्देशन के माध्यम से प्रविष्ट कराई जा सकती है। कई ऐसे पुश्तैनी पेशे होते हैं जो राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है। उनका दोहन या उनको दूषित करना राष्ट्रीय विनाश का कारण बनता है। इस हेतु निर्देशन की आवश्यकता है।

Scanned with CamScanner